विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय -संस्कृत दिनांक 02-05-2021

वर्ग-षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

प्रथमः पाठः

संस्कृत – वर्णमाला

अयोगवाद

जो वर्ण न स्वर होते हैं और न व्यंजन, उन्हें अयोगवाह कहते हैं। ये तो होते हैं, 'अनुस्वार' और 'विसर्ग। इनका स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नहीं होता है। इन्हें '•' तथा ':' चिह्नों से प्रकट किया जाता है।

संयुक्त व्यंजन

जो व्यंजन दो व्यंजनों को जोड़कर बनाए जाते हैं, उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। ये निम्नलिखित हैं-

क्ष् = क् + ष्	त्र् = त् + र्,	ज्ञ् = ज् + ञ्,
ध् = द् + ध्,	प्र् = प् + र्,	क्त् = क् + त् इत्यादि।

संयुक्त व्यंजन संस्कृत वर्णमाला का भाग नहीं है, क्योंकि इन्हे व्यंजनों को मिलाकर बनाया जाता है।

वर्ण - संयोजन या वर्ण -संयोग

स्वर एवं वर्णों को आपस में जोडने की प्रक्रिया - संयोजन कहते हैं। जैसे-

ज् + अ + ल् + अ + म्	= जलम्

वर्ण - विच्छेद या वर्ण - वियोजन

किसी शब्द में प्रयुक्त स्वर एवं व्यंजन को अगल-अलग करने की प्रक्रिया को वर्ण-विच्छेद या वर्ण-वियोजन कहते हैं। जैसे -

धनम् =	ध् + अ + न् + अ + म्

विशेष

- वर्ण - संयोजन में स्वर एवं व्यंजन वर्णों का मेल है।
- स्वर एवं व्यंजनों के सार्थक समूह को 'शब्द' कहते हैं।
- स्वर एवं व्यंजनों को अलग-अलग करने पर वर्ण- विच्छेद होता है।